224
800
M
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1208
10121

आह्वानांक Call No. ______

अवाप्ति सं॰ Acc. No. 800

IMPERIAL RECORDS
RECEIVED
30 MAR 1931

❀ बन्देमातरम् ❀

❀ स्वाधीनता का बिगुल ❀

या

॥ राष्ट्रीय भजनावली ॥

(द्वितीय भाग)

लेखक व प्रकाशक—
पण्डित रामेश्वरनाथ मालवीय
(कथावाचक)

प्रथम बार २०००] प्रयाग । [मूल्य)॥

891.431
M292SW

मुद्रक—सरयू लाल,
राजा प्रेस,
प्रयाग।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 800
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

श्रावण कृष्ण अमावस्या
संवत १९८७

प्रकाशक—
पं० रामेश्वरनाथ मालवीय,
प्रयाग।

❀ बन्देमातरम् ❀

❀ राष्ट्रीय भजनावली ❀

ख्याल

निकल पड़ो अब बनकर सैनिक भंग करो फरमानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं हटैंगे कौल रहे मर्दानों का॥
अन्धी हो कर पुलीस चलाये डन्डे कुछ परवाह नहीं।
घर का माल लूट ले जावे निकले मुख से आह नहीं॥
जेल यातना हो निर्दय दल करै गोलियों की बौछार।
ईश्वर का सुमिरन कर वीरो सहते जाओ अत्याचार॥
धनी देश रिपुदास नपुन्सक लखैं दृश्य बलिदानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं०

भगवन् भला करै ईर्विन का बने यशस्वी बृटिश निशान।
होय निहत्थों पर मार्शल्ला शहरों गावों के दर्म्यान॥
नर नारी बच्चों के गोरे अत्याचारी खूब हने।
भारत के कोने २ में जालियां वाला बाग़ बने॥
वीर बृटिश अब शान्त प्रजा के खूं की नदी बहा डालो।
गिरफ़ार कर लो गान्धी को जिन्दा उसे जला डालो॥
चिन्ता नहीं बहे लहराता चहुँ दिसि खून जवानों का।
बिन स्वराज्य के नहीं०

ऐ मादरे हिन्द

ऐ मादर हिन्द न हो ग़मग़ीन दिन अच्छे आने वाले हैं।
आज़ादी का पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं॥
मां तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ़ ज़ईफ़ी में।
मायूस न हो मग़रूरों को हम मज़ा चखाने वाले हैं॥
बेचैन हैं हम बे बस हैं हम गो कुंज क़फ़स के क़ैदी हैं।
बे बस हैं लाख मगर माता हम आफ़त के परकाले हैं॥
मेरी रूह को करना क़ैद क़फ़स इमकान से इनके बाहर है।
आज़ाद है अपना दिल शैदा गो लाख ज़बाँ पर ताले हैं॥
यहां आये मुसाफ़िर बड़े२ मग़रूर फिर आख़िर चले गये।
ये भी चन्दरोज़ में परदेशी लन्दन को जाने वाले हैं॥

प्रोत्साहन

भारत के नव जवानो मैदान जंग आओ,
बन देश प्रेमी अपना जीवन सफल बनाओ।
वे बीर त्यागी अपना कर्तव्य कर रहे हैं,
है राह उनकी सीधी उसपै कदम बढ़ाओ।
है कौन ऐसी शक्ती जो तुमको रोक लेगी,
गर एक साथ होकर बल अपना तुम देखाओ।
भय त्याग दो अभय बन स्वातन्त्र जंग छेड़ो,
भू माँ को अपनी वीरो बन्धन से तुम छोड़ाओ।

खद्दर महिमा

वतन की गुलामी छोड़ायेगा खद्दर,
गरीबों की इज्जत बचायेगा खद्दर।
हिन्दू है ताना मुसलमानी बाना,
बिनावट में दोनों को लायेगा खद्दर।
सड़ा लंका शायर मरा मान चेष्टर,
विदेशी की धज्जी उड़ायेगा खद्दर।
जो कोई भी खद्दर से नफ़रत करेंगे,
उन्हें भूत बनकर सतायेगा खद्दर।
कहें गान्धी बाबा जो पहिनोगे खद्दर,
तो शीघ्र स्वराज्य दिलायेगा खद्दर।

ग़ज़ल

उठा लो डेरा ऐ टोप वालों यहां तुम्हारा गुज़र नहीं है।
जो मुद्दतों से यों सो रहे थे अब जग पड़े हैं वे शेर सारे।
मिटा रहे हैं महज़ खुमारी हुआ फ़जिर क्या खबर नहीं है॥
बजा के डंका निकल पड़े हैं मैदान जंगे आकर खड़े हैं।
वतन हमारा मज़े उड़ाते हो तुम हमें अब सबर नहीं है॥
दिखाओ भाले चलादो गोली जकड़ दो बेड़ी हमें पकड़ के।
झुला दो फांसी पै जी चाहे तो हमें ज़रा भी उज्र नहीं है॥
निकल पड़े हैं बढ़े चलेंगे हटेंगे पीछे न पैर हरगिज़।
अबतो वतन पै हम मर मिटेंगे दहल उठे वह जिगर नहीं है॥
उठा लो डेरा ऐ टोप वाले० ॥

ग़ज़ल दादरा फ़ैशन निन्दा

बहिनो गंगा नहाने जो जाया करो।
ज्यादा फ़ैशन न अपना बनाया करो॥

शैर—ओटो सुगन्ध रोज तुम हो सर में डालती,
कंघी रबड़ से बालों को तुम हो संभालती।
टरकी साबुन से सर न भिजाया करो,
ज्यादा फ़ैशन न०।

चूड़ी रबड़ की हाथों में लेकर हो पहिनती,
नाजुक न बनो ऐसी बनो वीर मेहनती।
रोज़ चरखा भी घर में चलाया करो,
ज्यादा फ़ैशन न०।

धोती महीन मोल मंगाती हो चौक से,
फ़ीते वो लैस उनमें लगाती हो शौक से।
घर का पैसा न इनमें गंवाया करो,
ज्यादा फ़ैशन न०।

मज़बूत कपड़े पहनो बनो वीर बहादुर,
कटि में कटारी बांधो डरैं दुष्ट औ गादुर।
वीर विदुषी "रामेश्वर कहाया" करो,
ज्यादा फ़ैशन न०।

ख्याल

निकल पड़े मैदान जङ्ग में गर कोई अभिमानी है।
आज देखना है किसमें कितना दम कितना पानी है॥
उठ बैठो सब काम छोड़ कर आज देश हित नारी नर।
बलिदानों का ढेर लगा दो स्वतन्त्रता की वेदी पर॥
दहला दो दिल्ली दीवारें ओ भारत के बांके बीर।
चूर चूर कर दो सदियों की पराधीनता की जंजीर॥
आज हिन्द में फिर से मर कर नई जान पहिनानी है।
आज देखना है किसमें कितना०
लाल जवाहिर लूट लिये हमने भी कुछ परवाह न की।
वीर जवाहिर लेने पर हमने मुख से कुछ आह न की॥
प्राण जवाहिर आज छिन गया क्या चुपके रह जावोगे।
शर्मावोगे जरा नहीं क्या कुल में दाग़ लगाओगे॥
ब्याज सहित इन बनियों से हमको सब रक़म चुकानी है।
आज देखना है किसमें कितना०
रण दुंदुभी बजी गांधी की सहज कोई कप्तान नहीं।
या होंगे आज़ाद नहीं तो तन में होगी जान नहीं॥
किन्तु न कल से रहने देंगे अकल ठिकाने कर देंगे।
हम भारतीय आज मर कर माता की झोली भर देंगे॥
'माधव' आज लाज गांधी की मर कर उसे बचानी है।
आज देखना है किसमें कितना०

रंग दे बसन्ती चोला

मेरा रंग दे बसन्ती चोला भाई रंग दे बसन्ती चोला।
इसी रंग में गाँधी जी ने नमक पर धावा बोला ॥
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

इसी रंग में बीर सिवा ने माँ का बन्धन खोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

इसी रंग में भगत दत्त ने छोड़ा बम का गोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

इसी रंग में पेशावर में पठानों ने सीना खोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

इसी रंग में बिस्मिल असफ़ाक़ ने सरकारी ख़ज़ाना खोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

इसी रंग में बीर मदन ने गौरमेन्ट पर धावा बोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

इसी रंग को गुरु गोविन्द ने समझा परम अमोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

इसी रंग में पद्मकान्त ने माडर्न पर धावा बोला।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला ॥

इति